स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) - प्रथम खण्ड
(द्वितीय पत्र - प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

रामचरितमानस, बालकाण्ड - दो० 215, चौपाई - 1 से 4 तक

दो० 215

"प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर।
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ।।"

अर्थात् मन को प्रेम में मगन जानकर राजा जनक ने विवेकपूर्ण धीरज धारण किया और मुनि के चरणों में सिर झुका कर प्रेमभरी वाणी से कहा -

चौपाई - 1 - 4

(1) "कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक।।
बहु जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि की सोइ आवा ।।

(2) सहज बिरागरूप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा ।।
ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ।।

(3) इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ।।
कह मुनि बिहसि कहेहु नृपनीका। बचन तुम्हार न होइ अलीका ।।

(4) ए प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी। मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ।।
रघुकुल मनि दसरथ के जाए। मम हित लागि नरेस पठाए ।।

तुलसीदास द्वारा रचित काव्य 'रामचरितमानस' से अवतरित इन पंक्तियों में कवि ने मुनि विश्वामित्र (राम-लक्ष्मण) और राजा जनक के बीच संवाद का वर्णन किया है।

राजा जनक कहते हैं - हे नाथ ये दोनों सुन्दर बालक मुनिकुल के आभूषण हैं या किसी राजवंश के पालक? अथवा जिसका वेदों ने नेति कहकर गान किया है, वही ब्रह्म के ये दोनों रूप तो नहीं हैं! मेरा मन स्वभाव से ही वैराग्य रूप है, इन्हें देखकर इस प्रकार मुग्ध हो रहा है, जैसे चन्द्रमा को देखकर चकोर होता है। हे प्रभु! इसलिए मैं आपसे सत्य पूछता हूँ मुझसे कोई भेद न कर स्पष्ट बता दीजिए। इनको देख कर मन प्रेममग्न हो गया है और अब ब्रह्मसुख की इच्छा भी नहीं रही। यह सुनकर मुनि ने हँसकर कहा - 'हे राजन्! आपने यथार्थ ही कहा। आपका वचन मिथ्या नहीं हो सकता। इस जगत् में जितने भी प्राणी हैं, ये सभी को प्रिय हैं। मुनि की वाणी सुनकर राम मन ही मन मुस्कुराते हुए मुनि को संकेत करते हैं कि रहस्य को उजागर न करें। यह देखकर मुनि ने कहा - 'ये रघुकुलमणि महाराज दशरथ के पुत्र हैं। मेरे हित के लिए राजा ने इन्हें मेरे साथ भेजा है। असुरों ने जब मुनियों द्वारा किए जा रहे यज्ञ में बाधा पहुँचाया रहे थे तब विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को साथ लेकर वन निकले थे

Scanned with CamScanner